

# डॉ. डैनियल के. डार्को, जेल पत्र, सत्र 27, नई पहचान और नैतिकता, इफिसियों 4:17-32

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को जेल पत्रों पर अपनी व्याख्यान श्रृंखला में हैं। यह सत्र 27 है, नई पहचान और नैतिकता, इफिसियों 4:17-32।

जेल पत्रों पर बाइबिल अध्ययन व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

हमने जेल पत्रों की लगभग सभी पुस्तकों को कवर कर लिया है और हम इफिसियों के बीच में कहीं करीब पहुंच रहे हैं। मुझे उम्मीद है कि अब तक आपको यह पसंद आ रहा होगा। अब हम इफिसियों के अध्याय 4 के दूसरे भाग को देखना शुरू करते हैं, जिसे मैंने यूनाइटेड वी बिल्ड कहा है, एकता पर पॉल की सलाह, और कैसे उपहार और प्रतिभा वाले विभिन्न लोग और बाकी समुदाय इस एकता को बढ़ावा देने के लिए एक साथ काम कर सकते हैं।

इस विशेष क्षेत्र में, हम सत्र के पहले भाग को कवर करेंगे जो अध्याय 4, पद 17 से 24 से संबंधित है, जो एक बदली हुई मानसिकता की आवश्यकता पर प्रकाश डालता है, और फिर अध्याय 4, पद 25 से 32 तक, विशेष रूप से कुछ नैतिक सिद्धांतों को छूता है जो एक चर्च में स्पष्ट होने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि जिस एकता के बारे में हमने पहले बात की थी वह जीवंत हो, चर्च में वास्तविक हो। अध्याय 4, पद 17, सत्र की शुरुआत करता है। हम इस तरह पढ़ रहे हैं: अब, मैं यह कहता हूँ और प्रभु में गवाही देता हूँ कि तुम्हें अब से अन्यजातियों के समान अपने मन की व्यर्थता में नहीं चलना या जीना चाहिए। इस पद में जिसे आप यहाँ देख रहे हैं, पॉल एक अपील करता है और जिस अर्थ में यह कहना बेमानी लगता है, मैं कहता हूँ और गवाही देता हूँ। गवाही देने के लिए वह जिस शब्द का उपयोग करता है वह वह शब्द है जो गवाही देने का भाव रखता है, और कभी-कभी इसका उपयोग उन लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए भी किया जाता है जो आपके करीब हैं।

इसलिए, वह यह जोरदार अपील करता है, या, यदि आप चाहें, तो कुछ गंभीरता के साथ एक कोमल अपील करता है। मैं चाहता हूँ कि आप इस पर पूरा ध्यान दें। मैं यह कहता हूँ और आपको बताता हूँ, और मैं यह प्रभु में कह रहा हूँ और आपको बता रहा हूँ। लेकिन वह एक और कथन देता है: आपको अब अन्यजातियों की तरह नहीं चलना चाहिए। इसका क्या मतलब है? यह देखना बहुत ज़रूरी है कि पौलुस का क्या मतलब था जब उसने कहा था कि अब अन्यजातियों की तरह नहीं जीना या चलना चाहिए।

वास्तव में, यह इफिसियों पर मेरी पुस्तक का शीर्षक है। मुझे नहीं पता कि आप इसे कब पढ़ रहे हैं, आप शायद यह कह रहे होंगे कि इफिसियों पर एक और पुस्तक आने वाली है या ऐसा ही कुछ, लेकिन मेरी एक पुस्तक आई है जिसका नाम है 'अब गैर-यहूदी लोगों की तरह नहीं रहना', जिसमें मैं इफिसियों के अध्याय 4 पद 17 से लेकर इफिसियों के अध्याय 6 पद 9 तक का अध्ययन करता हूँ और नैतिक सिद्धांतों और वहाँ क्या चल रहा है, इस पर विचार करता हूँ। पॉल

का अब गैर-यहूदी लोगों की तरह नहीं रहने से क्या मतलब है? इस विषय पर मेरे सहकर्मियों के साथ 2006 से एक अच्छी बातचीत चल रही है, और मैं बहुत-बहुत धन्य हूँ। मुझे कहना चाहिए कि मैं यह देखकर उत्साहित हूँ कि नए टिप्पणीकार उस स्थिति को स्वीकार कर रहे हैं जिस पर मैं तर्क करने की कोशिश कर रहा हूँ।

जब पौलुस ने अन्यजातियों को पत्र लिखते समय कहा कि नहीं, मत जियो, अब अन्यजातियों की तरह मत जियो, तो इसका क्या मतलब है? वर्षों से, यह माना जाता रहा है कि जब पौलुस कहता है कि तुम्हें अन्यजातियों की तरह नहीं जीना चाहिए, तो वह शाब्दिक अर्थ में अन्यजातियों का उल्लेख कर रहा था। मेरा तर्क है कि नहीं, पौलुस अन्यजातियों को उसी अर्थ में अन्यजातियों की तरह न जीने के लिए नहीं कह सकता था जिस अर्थ में यहूदियों ने उन्हें रूढ़िबद्ध किया है। अध्याय 2 में, उसने मसीह में कहा, जो लोग तुम्हें खतना कहते हैं, जो तुम्हें खतना रहित कहते हैं और जो खतना किए हुए हैं, वे मसीह में एक हो गए हैं।

वह समुदाय में यहूदी रूढ़ियों को तोड़ता है जो एक बहु-जातीय यहूदी-गैर-यहूदी व्यवस्था से बना है। यहाँ, जब वह गैर-यहूदी शब्द का उपयोग करता है, तो मेरा मानना है कि यह बाहरी लोगों को संदर्भित करता है। दूसरे शब्दों में, जब यहूदी बाहरी लोगों को, जो परमेश्वर के लोगों से बाहर हैं, अशुद्ध गैर-यहूदियों के रूप में देखते हैं, तो अब, वह कह रहा है कि अब गैर-यहूदियों की तरह अपना जीवन न जिँ।

दूसरे शब्दों में, ईश्वर के लोगों के रूप में, आप अब अपना जीवन किसी बाहरी व्यक्ति की तरह नहीं जीते हैं। अगर हम पाठ को उस तरह से नहीं समझते हैं, तो यह अजीब होगा। यह लगभग यह कहने जैसा है कि आप एक अमेरिकी हैं। ठीक है, अब अपना जीवन एक अमेरिकी की तरह न जिँ। इसका क्या मतलब है? इस तरह, यह कहना कि आपके मन में अमेरिकी संस्कृति के बारे में कुछ खास बातें हैं, आप अमेरिकी से कह रहे हैं कि वह अपना जीवन उस तरह से न जिँ।

यह उन चीजों में से एक है जिसे मैं विद्वत्ता में लाता हूँ ताकि हम पहचान के निर्माण के तरीके में विभेदीकरण की बयानबाजी को कैसे देखते हैं। गैर-यहूदियों को यह बताना कि वे अब यहूदी की नज़र से गैर-यहूदी नहीं हैं और इसलिए अब वे गैर-यहूदी बाहरी लोगों के साथ जुड़ा हुआ जीवन नहीं जीते हैं, उन्हें शामिल होने का एहसास कराने और उन्हें ईश्वर के लोगों से संबंधित होने और ऐसा जीवन जीने के दायित्वों का एहसास कराने का एक तरीका है जो ईश्वर के लोगों को पराजित करता है और वह सबसे पहले उनकी मानसिकता को चुनौती देकर इससे निपटता है। मैंने अब तक आपका ध्यान इफिसियों की ओर आकर्षित किया है कि कैसे पॉल ज्ञान, मानसिकता के संदर्भ में चर्च के लिए बात करता है या प्रार्थना करता है, कैसे उन्हें अपने तर्क में कुछ परिवर्तन करना चाहिए, और यहाँ अब गैर-यहूदियों की तरह नहीं जीना चाहिए, वह उन्हें चुनौती देता है कि वे पहले अपनी मानसिकता को पूरी गंभीरता से देखें।

उन्होंने कहा कि वे अब अन्यजातियों की तरह अपने मन की व्यर्थता में नहीं जीते। यह एक ऐसी भाषा है जो रोमियों में पाई जाने वाली भाषा से काफी मिलती-जुलती है, और रोमियों के अध्याय 1, श्लोक 21 में, आप यहाँ इस तरह की भाषा को चलते हुए देखते हैं। यहाँ व्यर्थता के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द रोमियों में इस्तेमाल किया गया है, जिसे कभी-कभी अर्थहीन के रूप में

अनुवादित किया जाता है, क्योंकि यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं दिया या उसका धन्यवाद नहीं किया, बल्कि अपनी सोच में व्यर्थ हो गए, और उनके अर्थहीन मन अंधकारमय हो गए।

तो, आप इस अंश में देखेंगे कि पौलुस अंधकार शब्द का प्रयोग करेगा, वह व्यर्थ शब्द का प्रयोग करेगा, वह निरर्थक मानसिकता का प्रयोग करेगा, और आप इफिसियों में पौलुस को उसी भाषा का प्रयोग करते हुए देखते हैं, और रोमियों में, वह उस भाषा का प्रयोग उन लोगों को जोड़ने के लिए कर रहा है जो परमेश्वर को नहीं जानते हैं। पौलुस कहता है कि हे विश्वासियों, तुम अब ऐसे नहीं हो, और इसलिए अपने मन की व्यर्थता में ऐसा मत सोचो, जो अधर्मी अन्यजातियों से जुड़ा है। वैसे, मुझे यह स्पष्ट करना चाहिए कि एक यूनानी कभी भी अपने आप को अन्यजाति नहीं कहेगा। यह एक यहूदी था जिसने उन्हें अन्यजाति कहा, और इसलिए पौलुस ने उन्हें यह बताने के लिए यह योग्यता दी कि देखो, तुम शामिल हो, तुम महत्वपूर्ण हो, तुम परमेश्वर के लोगों का हिस्सा हो

उनके मन या उनकी समझ अंधकारमय हो गई है, और मैंने श्लोक 18 पढ़ा, वे अपनी समझ में अंधकारमय हैं। क्या आप उनकी मानसिकता की कल्पना कर सकते हैं, उनके तर्क करने का तरीका अंधकार से भरा है। इफिसियों में, पॉल बताते हैं कि अंधकार का जीवन मसीह के बिना जीवन है; यह भी अंधकार है, और यह वह क्षेत्र भी है जहाँ प्रधानताएँ और शक्तियाँ मौजूद हैं।

यहाँ वह कहता है कि उनके मन अंधकार से भरे हुए हैं, कोई अच्छी खबर नहीं। वे जिन चीज़ों के बारे में सोचते हैं वे अंधकार से भरी हुई हैं, और वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं, वह जीवन जो परमेश्वर अपने लोगों के लिए चाहता है। वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं।

दूसरा भाग, पद 18, परमेश्वर के जीवन से अलग हो गया है क्योंकि उनके हृदय की कठोरता के कारण उनमें अज्ञानता है। वे परमेश्वर के जीवन से अलग हो गए हैं, और अलगाव के कारण अज्ञानता और हठ हैं। पौलुस ने प्रार्थना की और उनसे आग्रह किया कि वे अपने लिए आवश्यक ज्ञान का आधार विकसित करें, और उन्होंने अपने भीतरी मन और हृदय में आत्मा को काम करने देने के बारे में भी बात की, लेकिन यहाँ वे कहते हैं कि उन्होंने कोमल बाहरी लोगों के लिए कहा, परमेश्वर उनके हृदय में काम नहीं कर रहा है, उनके हृदय कठोर हैं।

ईश्वरीय कोई भी चीज़ उनके दिलों में प्रवेश नहीं कर सकती क्योंकि उनके दिल बहुत कठोर हैं। उनके जैसा जीवन न जिउँ; यही पौलुस की पंक्ति है। उनके जैसा जीवन न जिउँ, और क्योंकि उन्होंने ऐसा करने के लिए खुद को अन्यजातियों के रूप में इस्तेमाल किया है, इसलिए पौलुस चाहता है कि चर्च यह समझे कि यह सब इसी वजह से हो रहा है। वे कठोर हो गए हैं।

शायद मुझे श्लोक 19 से पढ़ना चाहिए कि वे कठोर हो गए हैं और उन्होंने खुद को कामुकता और लालच के हवाले कर दिया है और हर तरह की अशुद्धता का अभ्यास किया है। उन्होंने खुद को कामुकता के हवाले कर दिया है। अपनी अँधेरी समझ और व्यर्थ मानसिकता के साथ, उन्होंने खुद को हर तरह के कामुक बुरे व्यवहार में डाल दिया है।

मेरा मतलब है, जब मैं कामुक दुष्ट व्यवहार कहता हूँ तो मुझे स्पष्ट करना चाहिए; ईसाई नैतिक ढाँचा ऐसा ही है। जो लोग खुद को सभी प्रकार की यौन जीवन शैली के लिए समर्पित करते हैं, वे बस लोगों के साथ सोते हैं और उनके साथ खिलवाड़ करते हैं, जैसे कि ग्रीक संस्कृति में। इस व्याख्यान के आरंभिक भाग में, मैंने आपको दार्शनिक डेमोस्थनीज के बारे में कुछ दिखाया, जिन्होंने कहा कि ग्रीक आदमी की एक पत्नी हो सकती है और उसकी एक उपपत्नी हो सकती है और उसकी रखैलें भी हो सकती हैं, और वह कहता है कि वे वैध पत्नी को इसलिए रखते हैं ताकि वह उन्हें वैध बच्चे और उनके जीवन के लिए अच्छे उत्तराधिकारी दे सके।

दूसरे शब्दों में, वे अपने जीवन का उपयोग कर सकते हैं, और लोग खुद को सभी प्रकार की कामुक जीवन शैली में ढाल लेते हैं। पॉल कहते हैं कि उनकी अन्धकारमय समझ और उनकी व्यर्थ मानसिकता ने वास्तव में उन्हें इस सब के लिए प्रेरित किया है। और उसके ऊपर, लालच और हर तरह की अशुद्धता की स्पष्ट भावना है।

अशुद्धता शब्द हिब्रू मूल से आया है, जिसमें अनुष्ठान और स्वच्छता का भाव है, लेकिन ग्रीक में, नए नियम में, कभी-कभी इस शब्द का इस्तेमाल यौन व्यवहार के साथ किया जाता है, जो सभी प्रकार के यौन विचलन को संदर्भित करता है जो अशुद्ध है। लेकिन पॉल इसे दूसरे शब्द के साथ जोड़ेंगे जिसका इस्तेमाल कभी-कभी यौन नैतिकता की प्रतियोगिता में किया जाता है: लालच। यौन नैतिकता में लालच अक्सर किसी ऐसे व्यक्ति का अर्थ रखता है जो किसी की पत्नी को लेने की कोशिश करने के लिए लालची होता है या किसी के साथी से ईर्ष्या करता है और उस व्यक्ति को पाने की कोशिश करता है, जहाँ लालच से प्रेरित वासना किसी व्यक्ति को किसी और के साथी या किसी और के साथ रहने की कोशिश करने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए मजबूर कर देगी।

मजबूरी की यह भावना लालच से प्रेरित होती है। तो, देखिए कि यौन इच्छाएँ और लालच कहाँ मिलते हैं। इस शब्द का इस्तेमाल कभी-कभी उस भावना को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, और दार्शनिकों, खुद प्राचीन दार्शनिकों ने लालच की निंदा की, लेकिन यह फिर भी समाज में प्रचलित था।

वास्तव में, यदि आप स्टोइक दर्शन को पढ़ते हैं, तो आपको एक बात का एहसास होगा कि कभी-कभी वे इस बात से निराश होते हैं कि वे किस तरह से आदर्श को बढ़ावा देते हैं, और वे कहते हैं कि लोकप्रिय संस्कृति में, लोग इसकी कम परवाह करते हैं। कभी-कभी, वे यह कहकर उनका अपमान भी करते हैं कि जानवर वह नहीं करेंगे जो वे करते हैं, फिर भी लोग परवाह नहीं करते। मैं आपको एक विशेष दार्शनिक का उदाहरण दूंगा जो विशेष रूप से लालच की निंदा करता है।

मैं आपको डियो क्रिसोस्टॉम का उदाहरण देता हूँ। डियो क्रिसोस्टॉम ने अपने ग्रंथ कनवर्तियसनेस में लिखा है, लालच न केवल एक व्यक्ति के लिए सबसे बड़ी बुराई है, बल्कि यह उसके पड़ोसियों को भी नुकसान पहुँचाता है, और इसलिए कोई भी लालची व्यक्ति पर दया नहीं करता। इफिसियों में भी यही शब्द इस्तेमाल किया गया है।

सभी उसे निर्देश देने की परवाह करते हैं, लेकिन सभी उससे दूर रहते हैं और उसे अपना दुश्मन मानते हैं। आप सोच सकते हैं कि अगर ऐसे लोग लालच की निंदा करते हैं, तो लालच प्रचलित नहीं है। नहीं, मैंने नैतिकता और प्राचीन नैतिकता पर आधुनिक चर्चाओं में अक्सर कहा है कि हम अपने नैतिक प्रवचनों में जिन चीजों को लेकर भ्रमित हैं उनमें से एक आदर्श और लोकप्रिय संस्कृति के बीच का अंतर है।

मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो अपनी समकालीन संस्कृति से ज़्यादा पहली और दूसरी सदी में इन चीज़ों के काम करने के तरीके का अध्ययन करने में अपना समय बिताता हूँ, मुझे यह जानना दिलचस्प लगता है कि नैतिकतावादी क्या कह रहे हैं और लोकप्रिय संस्कृति में क्या हो रहा है। जब मैं आज इसके बारे में सोचता हूँ, तो कभी-कभी मुझे लगता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के कानून क्या हैं और संयुक्त राज्य अमेरिका में लोग कैसे रहते हैं। क्या वे एक जैसे हैं? बिल्कुल एक जैसे नहीं। इसलिए यहाँ, दार्शनिक यहाँ तक कि प्रचलित चीज़ों की भी निंदा करता है, और पॉल का कहना है कि जो लोग मसीह को जान चुके हैं, उनके लिए यह वास्तव में उनके जीवन के तरीके का हिस्सा नहीं है।

उन्हें अब उन लोगों की तरह नहीं रहना चाहिए जो खुद को हर तरह की मानसिकता के अधीन कर चुके हैं जो लालच के इन सभी स्तरों से प्रभावित हैं। नहीं, मैं और भी बहुत कुछ कह सकता हूँ। दूसरी जगह, जहाँ मैंने सद्गुणों और दोषों और दक्षता के बारे में लिखा है, मैंने अनगिनत दार्शनिकों और नैतिकतावादियों की सूची दी है जो लालच की कड़ी निंदा करते हैं। लेकिन लालच हर जगह था।

उन्होंने अनैतिकता की निंदा की। यह हर जगह था। उन्होंने नशे की निंदा की।

लेकिन अपने खाली समय में, दार्शनिक एक खेल खेलते हैं जो उनके पास होता है, शराब के गैलन लाना और देखना कि कौन जल्दी गैलन पीता है। वे खुद, आदर्श और लोकप्रिय संस्कृति। ईसाई धर्म में, आदर्श वह है जो ईश्वर के बच्चों के लिए उपयुक्त है, और यही वह है जिसके अनुसार हमें अपना जीवन जीना चाहिए क्योंकि यही वह जीवन है जो उस बुलावे के योग्य है जिसके लिए हमें प्राप्त हुआ है।

मानसिकता के निर्माण में, अब वह कहता है कि यह वह है जो तुम्हें अब और नहीं होना चाहिए। लेकिन अब वह उन्हें मसीह-जैसी मानसिकता बनाने के लिए प्रेरित करने की कोशिश करता है, और इसलिए वह उन्हें कुछ खास बातें दिखाने जा रहा है जिससे उन्हें वह क्रांतिकारी बदलाव करना चाहिए और अब गैर-यहूदियों जैसा जीवन नहीं जीना चाहिए। आयत 20 से 21 तक।

लेकिन यह वह तरीका नहीं है जिससे आप मसीह के बारे में सीखते हैं। मान लीजिए कि आपने उसके बारे में सुना है और उसमें आपको सिखाया गया है और सच्चाई यीशु में है। खास तौर पर आयत 20 से 21 में, आपको कुछ ऐसे शब्द मिलेंगे जो बाइबल में नहीं हैं।

मुख्य शब्द हैं अपने पुराने स्वभाव को उतार फेंकना, जो तुम्हारे पिछले जीवन के तौर-तरीकों से संबंधित है और जो छलपूर्ण अभिलाषाओं के कारण भ्रष्ट हो गया है, और अपने मन की आत्मा में नया हो जाना, और सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता के अनुसार सृजित नए

स्व को पहन लेना। विशेष रूप से पद 20 से 21 में, आपको कुछ मुख्य शब्द मिलते हैं कि व्यर्थ मन बदल गया है और इसे स्वीकार करने की आवश्यकता है ताकि लोग फिर से वही जीवन न जीएँ। आपने मसीह को नहीं सीखा।

यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो अजीब लगती है, है न? जब आप सीखने के बारे में बात करते हैं, तो आप वास्तव में किसी व्यक्ति को सीखने के बारे में नहीं सोचते हैं। आप किसी पुस्तक को सीखने या किसी तरह की जानकारी या कुछ सीखने के बारे में सोचते हैं। लंबे समय से विद्वत्ता या इफिसियों में, यह अभिव्यक्ति, जो कि नए नियम में इस तरह की अभिव्यक्ति से बहुत अलग है, शायद एकमात्र बार है जब हमें इस तरह की अजीब अभिव्यक्ति मिलती है। हमने सिखाया है कि यह पॉल था जो कुछ ऐसा बना रहा था जो बहुत नया है।

लेकिन अब हम अपने शास्त्रीय मित्रों से मदद पा रहे हैं, जो हमें दिखाते हैं कि कुछ प्राचीन यूनानी लेखकों ने देवताओं के संदर्भ में इस तरह की अभिव्यक्ति का इस्तेमाल किया था। और जब वे कहते हैं कि आपने किसी विशेष देवता को सीखा है, जैसे कि यहाँ आपने मसीह को सीखा है, तो वे क्या कहते हैं, वे उस भाषा का उपयोग वास्तव में इस मजबूत अर्थ को व्यक्त करने के लिए करते हैं कि यह केवल बौद्धिक रूप से सीखना नहीं है, बल्कि आप व्यक्ति को सीख रहे हैं। आप व्यक्ति के साथ जीवन का अनुभव कर रहे हैं।

आप उस व्यक्ति का अनुभव कर रहे हैं; न केवल आपने उस व्यक्ति के मूल्यों और पहचानों के बारे में सुना है, बल्कि आप आध्यात्मिक रूप से उस व्यक्ति के साथ रह रहे हैं और इस आध्यात्मिक व्यक्ति से सीख रहे हैं। इसलिए जब पॉल कहता है कि आपने मसीह को इस तरह नहीं सीखा, तो वह कह रहा है कि आप वास्तव में मसीह के बारे में व्यक्तिगत अनुभव के रूप में कुछ सीखते हैं, न कि केवल उस ज्ञान के आधार पर जो आपको दिया गया था। मुझे लगता है कि यह बहुत बढ़िया है।

और अगर आप यह सब अपना रहे हैं, तो आप अब गैर-यहूदी की तरह नहीं रह सकते क्योंकि आपकी मानसिकता बदल गई है। अगर आप कुछ सीखते हैं और आपने इसे नहीं सीखा है, जैसे मेरे कुछ छात्र जो सामग्री को चबाते और याद करते हैं, अगर मैं उनसे परीक्षा में वे प्रश्न पूछता हूँ और जो कुछ भी मैंने उन्हें सिखाया है उसे भूल जाते हैं तो वे इसे वापस मेरे पास डाल देते हैं। अगर आप वास्तव में मसीह को सीखते हैं और इसे संसाधित करते हैं और इसे अपनाते हैं और इसका अनुभव करते हैं, तो एक क्रांतिकारी मानसिकता आ गई है, और आप अब उन गैर-यहूदियों की तरह उनके दिमाग की व्यर्थता में नहीं रहते हैं।

वह आगे कुछ और भी उजागर करता है। मान लीजिए कि आपने उसके बारे में सुना है, शब्द सुना, सुनना, सुनने के निर्देश के रूप में सुनना, सीखने और बढ़ने के लिए उसके बारे में कुछ सुनना, और आप यहाँ तक कहते हैं कि आपको उसमें सिखाया गया था क्योंकि यीशु में सत्य है। तो आप पूछ सकते हैं कि पॉल यहाँ क्या कर रहा है।

वह वास्तव में उस मानसिकता की निंदा करता है जो व्यर्थ है, और वह कहता है कि यही सत्य है, अन्यजातियों से जुड़े गुण, लेकिन यह तुम नहीं हो क्योंकि वास्तव में तुम यही हो। तुम वे लोग हो

जिन्होंने मसीह को सीखा है। तुम वास्तव में वे लोग हो जिन्होंने उसके बारे में सुना है और तुम वे लोग हो जिन्हें उसमें सिखाया गया है।

तो, बौद्धिक रूप से ऊपर जो चल रहा है, उसके संदर्भ में, आपका मन बदल गया है। यह वह अवधारणा है जिसे पॉल ने रोमियों में कहीं और समझाया है, मन के परिवर्तन के बारे में बात करते हुए। मुझे कहना चाहिए कि यह कुछ हद तक स्टोइक भी है क्योंकि, ईसाई धर्म और स्टोइक दर्शन दोनों में, जिस तरह से आप सोचते हैं वह आपके व्यवहार को प्रभावित करता है।

इसलिए, आपके आचरण में बदलाव लाने के लिए, तर्क में बदलाव होना चाहिए। पॉल कहते हैं कि अन्यजाति लोग इस तरह के भ्रष्ट नैतिक मुकाबलों में जीते हैं और भ्रष्ट नैतिक गुणों का प्रदर्शन करते हैं क्योंकि उनकी समझ अंधेरी है और मानसिकता भ्रष्ट है। मसीह में विश्वास करने वालों के लिए, उन्होंने सीखा है, उन्होंने जाना है, और उन्हें अलग तरह से सिखाया गया है।

और इसलिए, उनकी मानसिकता बदल गई है, और वे सही दिशा में नहीं जा सकते। इसी बात को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आमूलचूल परिवर्तन का आह्वान किया है। वे पुराने कपड़ों को उतारने, पुराने कपड़ों को उतारने और पुरानी जीवनशैली को अपनाने के लिए कपड़ों के रूपक का उपयोग करते हुए आमूलचूल परिवर्तन का आह्वान करते हैं।

उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि जीवन का पुराना तरीका धोखेबाज़ इच्छाओं से भ्रष्ट हो गया है। और उन्होंने इसे अनिवार्य रूप से रखा। उड़ान भरें।

यहाँ, वह व्यक्तिगत जिम्मेदारी की माँग कर रहे हैं। अब जबकि उन्होंने सीख लिया है, वे जानते हैं, और उन्हें सिखाया गया है, तो उनकी जिम्मेदारी है कि वे अपने पुराने वस्त्र उतार दें, जो उन्हें गलत धारणा देते हैं कि वे कौन हैं। उनमें आंतरिक परिवर्तन आया है।

उनकी मानसिकता में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है। उन्हें अपना नज़रिया बदलना होगा। यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे इसे उतार दें और उन शर्मनाक व्यवहारों को उतार दें जैसे कि फटे हुए कपड़े और फटे हुए कपड़े।

उन्हें उड़ान भरनी चाहिए। लेकिन श्लोक 23 पर गौर करें। वहां एक बहुत ही दिलचस्प पंक्ति है।

नवीनीकृत होना। यह अनिवार्य नहीं है। यह बीच में है और ग्रीक में एक कृदंत है, जहाँ उन्हें अपने मन में नवीनीकृत होने का लाभ उठाना चाहिए।

पुराने को उतार फेंको। अब, आइए हम फिर से मानसिकता पर वापस लौटें और मन में नयापन लाएं। रूपांतरित न हों, बल्कि मन में नयापन लाएं, रोमियों 12।

यहाँ यही अवधारणा है। ईश्वर को अपने मन में काम करने दें। अपने मन को बदलने के लिए ईश्वर की आत्मा का लाभ उठाएँ ताकि वह आपके व्यवहार को प्रतिबिंबित कर सके।

और फिर आप आगे कहते हैं कि यदि यह नवीनीकरण आपके मन में होता है, तो दूसरा आदेश है नया धारण करना। और नए की प्रकृति, नया बनाया गया है, श्लोक 24, और नया स्वत्व धारण करना, जो सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता के अनुसार बनाया गया है। निर्मित शब्द पर ध्यान दें।

हम सृजित शब्द से कहाँ मिले? हमें इफिसियों के अध्याय 2, पद 10 में सृजित शब्द मिला, जब उसने कहा, तुम इन सभी अच्छे कामों को करने के लिए पहले से सृजित हो। फिर, इफिसियों के अध्याय 2 में, परमेश्वर ने मसीह में एक नया समुदाय बनाया। उसने कहा कि तुम वास्तव में यहाँ पद 24 में सृजित हो। तुम एक निश्चित जीवन जीने के लिए परमेश्वर की समानता में सृजित हुए हो।

यह भगवान के लिए उपयुक्त है। आपकी पहचान भगवान से जुड़ी हुई है। आपके चरित्र में उस पहचान को प्रतिबिंबित करना चाहिए।

आज जब मैं इस व्याख्यान के बारे में सोच रहा था, तो मुझे एक ऐसी किताब के बारे में ख्याल आया जो शायद आप अपनी शेल्फ पर रखते होंगे जब आप अध्ययन करने की कोशिश करते हैं। और मुझे लगा कि आप में से कई लोगों के पास मैथ्यू हेनरी की पुरानी अच्छी टिप्पणियाँ होंगी। तो, मैंने सोचा, हाँ, चलो मज़े के लिए ऐसा करते हैं।

आप इसे अपनी शेल्फ पर रख सकते हैं, और फिर आप इसे देख सकते हैं और देख सकते हैं कि मैथ्यू हेनरी ने क्या कहा है। तो, मैंने कहा, आइए देखें कि मैथ्यू हेनरी ने इस विशेष, विशेष अंश के बारे में क्या कहा है। और यही वह है जो उसने कहा है।

पापपूर्ण इच्छाएँ कपटपूर्ण वासनाएँ हैं। वे मनुष्य को सुख का वादा करती हैं, लेकिन उन्हें और अधिक दुखी बनाती हैं और विनाश की ओर ले जाती हैं। इसलिए, यदि उन्हें वश में नहीं किया जा सकता और उनका अपमान नहीं किया जा सकता, तो उन्हें पुराने वस्त्र, गंदे वस्त्र की तरह उतार फेंकना चाहिए; उन्हें वश में किया जाना चाहिए और उनका अपमान किया जाना चाहिए, लेकिन भ्रष्ट सिद्धांतों को दूर करने के लिए यह पर्याप्त नहीं है।

हमें नए मनुष्य के द्वारा अनुग्रहपूर्ण लोगों को प्राप्त करना चाहिए, जिसका अर्थ है नया स्वभाव, नए सिद्धांत द्वारा निर्देशित नया प्राणी, यहाँ तक कि पुनर्जीवित अनुग्रह, एक व्यक्ति को धार्मिकता और पवित्रता का नया जीवन जीने में सक्षम बनाना। जो लोग अब गैर-यहूदी नहीं हैं, वे अब सक्षम हैं और उनके पास पुराने को उतारने, मन में नयापन लाने, नए को धारण करने की व्यक्तिगत जिम्मेदारी है, जो धार्मिकता और पवित्रता में परमेश्वर की समानता के अनुसार बनाया गया है, जो दो आवश्यक क्षेत्रों में परमेश्वर के चरित्र को दर्शाता है। धार्मिकता को कभी-कभी परमेश्वर के साथ सही संबंध के रूप में समझाया जाता है, जो साथी मनुष्यों के साथ सही संबंध को दर्शाता है।

धार्मिकता, पवित्रता, परमेश्वर के उपयोग के लिए अलग रखा जाना, पवित्र उद्देश्यों के लिए अलग रखा जाना। परमेश्वर का चरित्र परमेश्वर के लोगों में प्रतिबिम्बित होना चाहिए। टिलमैन इफिसियों 4, 17 से 24 में लिखते हैं कि पौलुस कहता है कि पाठकों के जीवन में उनके धर्म परिवर्तन के समय उनके अंदर हुए नाटकीय परिवर्तन को प्रतिबिम्बित करना चाहिए।

उन्हें अब उस तरह से नहीं जीना चाहिए जो उनके भ्रम, शैतानी नियंत्रण और निराशा को दर्शाता है जो उन लोगों की विशेषता है जो ईश्वर द्वारा प्रदान किए गए जीवन से अलग हो गए हैं। इसके बजाय, उन्हें ऐसे तरीके से जीना चाहिए जो दिखाए कि उनकी सोच लगातार आध्यात्मिक रूप से नवीनीकृत होती है और वे ईश्वर की छवि में पुनर्जीवित होते हैं, जो धर्मी और पवित्र है। जैसा कि पॉल उस नोट को समाप्त करता है, यह याद करते हुए कि उन्हें धार्मिकता और पवित्रता के लिए कैसे बनाया गया है, अब आप कुछ गुणों और दोषों के बारे में विशेष रूप से बात करने के लिए आगे बढ़ सकते हैं जिनसे निपटने की आवश्यकता है।

इसलिए, मैं 25 से 32 तक चरण दर चरण आगे बढ़ने जा रहा हूँ, कुछ सद्गुणों और दुर्गुणों को देखते हुए, कुछ ऐसी चीजें जो उन्हें करनी चाहिए, और कुछ ऐसी चीजें जो उन्हें नहीं करनी चाहिए। और मुझे आपका ध्यान इस तथ्य की ओर आकर्षित करना चाहिए कि यहाँ से आगे, आप देखेंगे कि पॉल अधिक विपरीत पैटर्न का उपयोग कर रहा है। पहले, उन्होंने विपरीत पैटर्न का उपयोग किया था, लेकिन वे इतने स्पष्ट नहीं थे, अध्याय 2 को छोड़कर, जब उन्होंने तब और अब के संदर्भ में विपरीतता का अधिक उपयोग किया।

अध्याय 4 में, वह श्लोक 17 से विपरीतता का उपयोग करता है, लेकिन यह इतना स्पष्ट नहीं है, जहाँ वह कोमल मानसिकता के बारे में बात करता है जो उस मानसिकता के विपरीत है जिसे परमेश्वर के बच्चों के बीच विकसित करने की आवश्यकता है। यहाँ से, वह कई तरीकों से बहुत स्पष्ट होने जा रहा है, खासकर जैसा कि वह ग्रीक पाठ में दिखाता है, विपरीतता को चित्रित करते हुए यह कहने के लिए नहीं कि वह समानताएँ बना रहा है, बल्कि प्राचीन नैतिक प्रवचन में एक बहुत ही उपयोगी बयानबाजी की रणनीति के रूप में है कि क्या नहीं करना चाहिए, ताकि लोग पूरी स्पष्टता से समझ सकें कि उन्हें क्या करने की आवश्यकता है। सूची में पहला है झूठ से सच बोलने की ओर बढ़ना।

पद 25. इसलिए झूठ बोलना छोड़कर तुम में से हर एक अपने पड़ोसी से सच बोले, क्योंकि हम एक ही देह के अंग हैं। यहाँ पाठ को देखते हुए यह बहुत महत्वपूर्ण है।

झूठ को दूर रखो, सच बोलो। यह ऐसी संस्कृति है जिसमें टेलीविजन नहीं दिखाया जाता। यह एक ऐसी संस्कृति है जिसमें समुदाय की संस्कृति है, अधिक सांप्रदायिक और व्यक्तिवादी नहीं।

किसी भी समुदाय में एकता कायम रखने के लिए सत्य का होना ज़रूरी है। समुदाय के हर सदस्य या हर सदस्य को भरोसा विकसित करने के लिए सत्य जानने का अधिकार है। पौलुस ने कहा कि उन्हें झूठ को दूर रखना चाहिए और अपने पड़ोसियों से सच बोलना चाहिए; पड़ोसियों के संदर्भ में, वह साथी विश्वासियों का उल्लेख कर रहा था।

उन्हें अपने साथी विश्वासियों के साथ ईमानदार होना चाहिए क्योंकि हम एक दूसरे के सदस्य हैं। आप सोच सकते हैं कि वह कहने जा रहा था, हम मसीह के सदस्य हैं। नहीं, हम एक दूसरे के हैं।

और हर सदस्य को सच बताया जाना चाहिए। अब, सच्चाई को छूकर, आइए यहाँ के एक संवेदनशील मुद्दे पर आते हैं। चलिए गुस्से के बारे में बात करते हैं।

तो, आइए देखें कि क्रोध के विषय में उसका क्या कहना है - आयत 26 से 27। क्रोध करो, पर पाप मत करो, पर पाप मत करो।

अपने क्रोध को सूर्य अस्त होने न दें और शैतान को कोई अवसर न दें। यहाँ, आप कुछ ऐसा देखने जा रहे हैं जो पौलुस बाद में करेगा क्योंकि पद 31 में, वह क्रोध के बारे में भी बात करेगा। इसलिए, वह इस प्रवचन में क्रोध और क्रोध के बीच अंतर बताता है।

वाह। क्रोध और गुस्से के बीच का अंतर। क्या गुस्सा होना ठीक है? मैं आपको कुछ जीवंत तस्वीरें दिखाता हूँ जैसा कि मुझे पसंद है।

क्या यह परिचित है? क्या आपने कभी किसी ऐसे व्यक्ति को देखा है जो फ़ोन पर किसी से बात करते समय इतना क्रोधित हो कि वह अपने फ़ोन को देखता है और उसे फ़ोन बंद करने का मन करता है? या यह परिचित है? क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति से मिले हैं जो इतना क्रोधित हो, कि किसी मज़बूत व्यक्ति की ओर ऐसे इशारा करता हो जैसे कि तलवार आपकी आत्मा पर वार कर रही हो? साहस के बारे में क्या? अब, अगर आपको लगता है कि बीस और चालीस के बीच के सभी युवा पुरुष और महिलाएँ क्रोधित हो जाते हैं, तो क्या आपको लगता है कि बच्चे भी क्रोधित हो जाते हैं? जब पॉल कहता है कि क्रोधित हो और पाप न करो, तो वह क्या कह रहा है? क्रोध हर जगह था। लोगों को क्रोधित होना पसंद है, और जब लोग क्रोधित होते हैं, तो यह अच्छा नहीं होता। यह एक ऐसी संस्कृति है जिसमें शराब पीना भोजन बनाने के तरीके का एक मुख्य हिस्सा है।

साहित्य से पता चला है कि ज़रूरत से ज़्यादा शराब पीना बहुत आम बात है। दूसरे शब्दों में, लोग थोड़ा ज़्यादा शराब पी लेते हैं और वे ऐसी बातें कह देते हैं जो उन्हें नहीं कहनी चाहिए। वे वैसा व्यवहार करते हैं जैसा उन्हें नहीं करना चाहिए। रोमानियाई अभिव्यक्ति में, उन्हें प्रोत्साहन मिलता है।

जब वे किसी ऐसे व्यक्ति को देखते हैं जो आधा नशे में है और बुरा व्यवहार कर रहा है, तो वे कहते हैं कि उस व्यक्ति को प्रोत्साहन मिला है। और मैं कहता हूँ कि बोतल से प्रोत्साहन मिला है। इसलिए, जब आप उस संदर्भ में क्रोध के बारे में बात करते हैं, तो क्रोध चीजों को बहुत दूर तक ले जा सकता है।

लेकिन आपको यह भी जानना चाहिए कि प्राचीन दुनिया में नैतिकतावादी क्रोध के बारे में कैसे बात करते थे। और उदाहरण के लिए, अरस्तू ने अपने निकोमैचेन एथिक्स में, वह उस गति को निर्धारित करेगा जिस पर बाद के दार्शनिक महत्वपूर्ण रूप से निर्माण करेंगे। अपने निकोमैचेन एथिक्स 4 में, वह कहते हैं, वह व्यक्ति जो सही चीजों पर और सही लोगों के साथ और इसके अलावा, जैसा कि उसे करना चाहिए, जब उसे करना चाहिए, और जब तक उसे करना चाहिए, उसकी प्रशंसा की जाती है।

दूसरे शब्दों में, सही चीजों के लिए, सही समय पर, सही लोगों के साथ, सही ढांचे के भीतर, किसी अच्छे कारण के लिए क्रोधित होना वास्तव में नेक है। पॉल कहते हैं, क्रोधित हो जाओ; मैं तुमसे

कहता हूँ, यूनानी में लिखा है, क्रोधित हो जाओ लेकिन पाप मत करो। तो, आज्ञा का अर्थ है, मैं तुम्हें क्रोधित होने की आज्ञा दे रहा हूँ।

या, मैं आपसे क्रोधित होने का अनुरोध करता हूँ। शायद पॉल जानता है कि वह लोगों को क्रोधित होने से नहीं रोक सकता। हो सकता है कि जब आप इन अध्ययनों में भाग लेते हैं, तो आप कभी क्रोधित नहीं होते और आप सोचते हैं कि यह सब क्या है? मुझे लगता था कि ईसाइयों को क्रोधित नहीं होना चाहिए।

भगवान आपको इसके लिए आशीर्वाद दें। हममें से कुछ लोग यहाँ-वहाँ क्रोधित हो जाते हैं। पॉल कहते हैं कि क्रोधित तो हो लेकिन पाप न करें।

अरस्तू का कहना है कि क्रोध महत्वपूर्ण है। वास्तव में, निकोमैचेन एथिक्स के उस ग्रंथ में, अरस्तू ने तर्क दिया है कि अगर लोग समाज में बुराई पर क्रोधित नहीं होंगे, तो न्याय नहीं होगा। लोगों को अन्याय के बारे में क्रोधित होने की आवश्यकता है ताकि वे उन गलत कामों को संबोधित कर सकें और सुनिश्चित कर सकें कि वे दोबारा न हों।

वह एक न्यायालय परिदृश्य के बारे में बात करते हुए विस्तार से बताते हैं, जहाँ न्यायाधीश को गलत काम के लिए सही दंड लगाने के लिए पर्याप्त रूप से क्रोधित होने की आवश्यकता होती है ताकि समाज शांतिपूर्ण रहे। कभी-कभी, उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि एक न्यायाधीश सजा सुनाते समय क्रोधित होने का नाटक कर सकता है ताकि जब वे सजा सुनाएँ, तो सजा सुनाने वाला व्यक्ति जानता हो कि अगर वह उस न्यायाधीश के सामने फिर से आने की हिम्मत करता है, तो यह अच्छा नहीं होगा। सही कारण के लिए क्रोधित होना।

पॉल कहते हैं कि गुस्सा करो लेकिन पाप मत करो। उसका क्या मतलब है? इस बारे में सोचो। अरस्तू ने यह भी कहा, अगर आपको लगता है कि यह सब गुस्से और उस गुस्से के लिए है और बस जो भी आप करना चाहते हैं, उन्होंने निकोमैचेन एथिक्स 4 में भी कहा कि अच्छे स्वभाव के लिए, हम एसएस का विरोध करते हैं बजाय हार के, दोष, क्षमा करें।

न केवल आम बात है, बल्कि बुरे स्वभाव वाले लोगों के साथ रहना भी बदतर है। क्या आप कभी किसी बुरे स्वभाव वाले व्यक्ति के साथ रहे हैं? अरस्तू कहते हैं कि ऐसे लोगों से निपटना बहुत बुरा होता है। अध्याय 4, श्लोक 31 में, यहाँ पॉल कहते हैं कि क्रोधित तो हो लेकिन पाप न करें।

431 में, वह क्रोध की एक सूची देता है, जैसा कि वह लिखता है, सब प्रकार की कड़वाहट और क्रोध और क्रोध और कलह और निन्दा सब प्रकार की बैरभाव के साथ तुम से दूर हो। उन शब्दों को ध्यान से देखें, क्रोध, कलह, निन्दा क्योंकि वे यूनानी शब्द हैं जो क्रोध के विभिन्न रूपों को व्यक्त करते हैं, और यहाँ वह कहता है कि उन्हें अपने से दूर कर दो, हालाँकि पद 26 में वह कह रहा है कि क्रोध करो, लेकिन पाप मत करो। अपने क्रोध को सूर्यास्त तक न रहने दो।

यहाँ 31 में वह जो कह रहा है वह यह है: लंबे समय तक क्रोध करना समस्याजनक है, और यहाँ, जब वह इसे दूर करने के लिए कहता है, तो वह उस अभिव्यक्ति को निष्क्रिय रूप में रखता है जैसे कि एक व्यक्ति ने खुद को क्रोध की आत्मा में इतना फंसने दिया है कि उन्हें बाहरी मदद की

ज़रूरत है ताकि भगवान उन्हें इस क्रोध से बाहर निकाल सकें। लेकिन मैं आपको क्रोध के लिए यहाँ इस्तेमाल किए गए शब्दों का अर्थ दिखाता हूँ जो क्रोध, गुस्सा, कोलाहल और बदनामी को दर्शाते हैं क्योंकि अंग्रेजी अनुवाद इन शब्दों के अर्थों के साथ हमारा पर्याप्त पक्ष नहीं कर सकते हैं। ग्रीक शब्द कड़वाहट में कड़वाहट के रूप में अनुवादित पहला शब्द एक गहरा बैठा हुआ क्रोध है जो शाप, कठोर या कड़वे शब्दों के रूप में फट सकता है या बह सकता है, और इस प्रकार इसकी जड़ और आधार एक कड़वी पित्त की तरह है जब क्रोध का यह रूप विस्फोटित नहीं होता है तो यह एक व्यक्ति के दिल में बैठ जाता है और कैंसर की तरह दिमाग को जकड़ लेता है और भगवान द्वारा व्यक्ति को दिए गए सभी अच्छे गुणों को खा जाता है, और इसलिए हम इसे कड़वाहट कहते हैं।

यह क्रोध का एक रूप है जो एक घर पा चुका है और बरकरार रखा गया है, और जैसे-जैसे यह वहाँ बरकरार रहता है, यह बढ़ता जाता है और बढ़ता जाता है और इतना कड़वा हो जाता है और लोगों के जीवन जीने के तरीके में तब्दील होने लगता है जैसे कि वे हर मिनट एक कड़वी गोली निगल रहे हों। दूसरा शब्द, जिसका अनुवाद क्रोध के रूप में किया जाता है, क्रोध की अभिव्यक्ति को सबसे हिंसक अभिव्यक्ति के रूप में व्यक्त करता है, इसलिए क्रोध ने खुद को अभिव्यक्त किया। मैं अपने इतालवी मित्र को बताना चाहता हूँ कि यह मेरे गृह देश घाना में क्रोध का इतालवी रूप है। हमारे पास उत्तरी घाना में एक विशेष जनजाति है, और इस तरह वे अपना गुस्सा व्यक्त करते हैं। मेरा मतलब है, अगर आप बस इस तरह से भड़क जाते हैं कि इसे आराम से लें, चलो, चलो, इसे आराम से लें। पॉल कहते हैं कि ऐसे लोग हैं जो कड़वाहट में फँसे हुए हैं, जो वहाँ बैठी है और उन्हें खा रही है, और यह उन्हें थका रही है, लेकिन कुछ लोग जो इस तरह के क्रोध से पीड़ित हैं, उन्हें इसे अपने से दूर रखना चाहिए, दूसरे शब्दों में, भगवान को इसे आपसे दूर करने का लाभ उठाएं क्योंकि यह सामुदायिक जीवन में बाधा डालता है और यह बहुत से लोगों को प्रभावित करता है।

यहाँ इस्तेमाल किए गए क्रोध के शब्दों का दूसरा रूप पारंपरिक शब्द है जो पहले इस्तेमाल किया जाता था। इसे कभी-कभी मानव आत्मा की शांत, निश्चित प्रतिक्रिया के रूप में समझा जाता है जिसे उसके शांत अंदर रखा जाता है। वे क्रोधित हैं, लेकिन वे दिखावा कर रहे हैं कि कुछ भी नहीं हो रहा है, और यह वहाँ लंबे समय तक बैठा रहता है। दूसरा, जिसे कभी-कभी कोलाहल के रूप में अनुवादित किया जाता है, गुस्से में चिल्लाना और चीखना है, और दूसरा ईशनिंदा है, जो कि ईशनिंदा या कभी-कभी बुरा बोलना है। कभी-कभी, द्वेष वास्तव में एक शब्द है जिसका उपयोग ईश्वर के खिलाफ बोलने या जलन या हताशा के परिणामस्वरूप दूसरों की निंदा या बदनामी करने के लिए किया जाता है। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो क्रोधित है जो इस तरह से न्यायोचित ठहराता है कि ओह, मेरे परिवार में, हम ऐसे ही हैं, आप जानते हैं, हम हमेशा ऐसे ही होते हैं। हम हमेशा क्रोधित रहते हैं।

पॉल कहते हैं कि क्रोधित हो लेकिन पाप मत करो, अपने क्रोध को सूर्यास्त तक मत रहने दो, लेकिन अगर ऐसा न हो कि तुम्हारे अपने काम से या तुम्हारे अपने काम से नहीं, तुम्हारे खिलाफ कुछ किया जाए तो वह कड़वाहट और क्रोध में फँस जाए, और क्रोध के इस सभी रूप को मैंने बताया, उसने कहा कि इसे अपने से दूर रखो, भगवान से प्रार्थना करो कि वह तुम्हें इससे बाहर निकलने में मदद करे क्योंकि यह तुम्हें प्रभावित करता है। परामर्श में, यह कहा जाता है कि लोगों

को चोट पहुँचाना दूसरों को चोट पहुँचाता है। इसे अंग्रेजी में अच्छी तरह से समझने के तरीके से कहें तो यह कहना है कि लोगों को चोट पहुँचाना दूसरों को चोट पहुँचाता है।

जो लोग अंदर से दुखी होते हैं, वे दूसरों को भी दुखी करते हैं, और जब वे दूसरों को दुखी करते हैं, तो उन्हें अक्सर यह एहसास भी नहीं होता कि वे दूसरों को दुखी कर रहे हैं, क्योंकि वे दुखी हैं, जो उनके लिए बहुत सामान्य बात है। अगर आप ऐसी किसी भी चीज़ से जूझ रहे हैं, तो इसे अपने से दूर रखें क्योंकि यह ईश्वर की इच्छा है कि आप स्वतंत्र रूप से जिएँ। कुछ ईसाई नेताओं और सलाहकारों से बात करके मदद लें।

क्रोध उन चीजों में से एक है जो विनाश करती है। पॉल का कहना है, अगर मैं इसे संक्षेप में बताऊँ, तो यह है: और शायद इससे पहले कि मैं ऐसा करूँ, मुझे प्लूटार्क की यह बात पढ़नी चाहिए, जो एक दार्शनिक हैं और शराब और क्रोध पर सवाल उठाते हैं और बताते हैं कि ये चीजें एक साथ कैसे काम करती हैं।

क्योंकि मिश्रित शराब क्रोध से अधिक असंयमित और घृणित कुछ भी उत्पन्न नहीं करती। शराब के साथ उड़ाए गए शब्द हंसी और खेल के साथ अच्छे लगते हैं, लेकिन क्रोध से निकले शब्द पित्त के साथ मिश्रित होते हैं। जब क्रोध वक्षस्थल में उमड़ता है, तो बेकार की जीभ को रोकिए।

अपनी जीभ पर नियंत्रण रखना सुनिश्चित करें। लेकिन अब मैं आपको क्रोध प्रबंधन के लिए पॉल के उपाय बताता हूँ। पद 26 से 27 में, वह कहता है कि क्रोध एक आवश्यक भावना है।

गुस्सा करें। अपने गुस्से को व्यक्त करने में संकोच न करें। लेकिन अपने गुस्से को सूरज डूबने न दें।

समय की सीमा तय होनी चाहिए। क्रोध थोड़े समय के लिए होना चाहिए। अगर आप माफ़ नहीं करते या समस्या से निपटते नहीं हैं, तो यह आपके भीतर घर कर लेता है और नुकसान पहुंचाता है।

श्लोक 27 वह है जिसके बारे में अक्सर बात नहीं की जाती। क्योंकि जब आप श्लोक 27 को देखते हैं, तो श्लोक 27 को श्लोक 26 के साथ एक बहुत ही सरल संयोजन के साथ जोड़ा गया है जो क्रोध पर चर्चा को जोड़ता है और क्रोध पर प्रभाव का एक हिस्सा दिखाता है। और यह पढ़ता है, और शैतान को कोई अवसर न दें।

इसका मतलब है कि क्रोध में शैतानी प्रभाव की संभावना होती है। अगर आप क्रोध को लंबे समय तक अपने दिल में रहने देते हैं, तो आप शैतान को अपने अंदर बसने का मौका देते हैं, ग्रीक शब्द टोपोस के अनुसार, आप शैतान को अपने अंदर बसने का मौका देते हैं। पॉल इस बारे में बात करता है कि कैसे मसीह में, उसकी सभी शक्तियों पर विजय प्राप्त की जाती है।

और फिर भी वह यहाँ सुझाव दे रहा है कि विश्वासी के पास शैतान के लिए दरवाज़ा खोलने की क्षमता है ताकि वह नुकसान पहुँचा सके। क्रोध का विनाशकारी प्रभाव तब होता है जब इसे

नियंत्रित या नियंत्रित नहीं किया जाता है। और इसलिए, श्लोक 31 में, विश्वासी को मदद माँगनी चाहिए और भगवान से उस स्थिति से बचाने के लिए कहना चाहिए।

और पौलुस ने तुरन्त ही इसकी तुलना पद 32 से की, क्रोध के बारे में बात करते हुए। क्रोध के बजाय, वह पद 32 में लिखता है, एक दूसरे के प्रति दयालु बनो। कोमल हृदय, क्षमा करें, कोमल हृदय।

एक दूसरे को क्षमा करो जैसे कि परमेश्वर ने मसीह में तुम्हें क्षमा किया है। यह बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि वह यहाँ यही कह रहा है।

क्रोध के बजाय, विपरीत गुणों को पनपने दें। अपने दिल में ये सब चीज़ें ढूँढ़ने के बजाय, अपने दिल को कोमल होने दें। अपने दिल में, अपने दिमाग में माफ़ करने के लिए जगह ढूँढ़ें।

क्षमा को इसके प्रति निर्देशित किया जाना चाहिए; इसे पारस्परिक होना चाहिए। इसे एक दूसरे के प्रति होना चाहिए। और जब आप एक दूसरे को क्षमा करते हैं, तो यह केवल एक साधारण क्षमा नहीं है।

मसीह, जिसने सबसे पहले हमें क्षमा किया, क्षमा का आदर्श होना चाहिए। क्या आपको अंतिम प्रार्थना में वह पंक्ति याद है जिसमें कहा गया है, हमारे ऋणों को क्षमा करें जैसे हम उन्हें क्षमा करते हैं, या जैसे हम अपने ऋणदाताओं को क्षमा करते हैं? या कभी-कभी इसका अनुवाद इस प्रकार किया जाता है कि हमारे अपराधों को क्षमा करें जैसे हम उन लोगों को क्षमा करते हैं जो हमारे विरुद्ध अपराध करते हैं।

दूसरे शब्दों में, हे परमेश्वर, यदि हम उन लोगों को क्षमा नहीं करते जो हमें ठेस पहुँचाते हैं, तो आप हमें क्षमा न करें। यह एक और तरह की प्रार्थना है जो हम करना चाहते हैं। पॉल ने कहा, क्रोध के बजाय, आइए हम मसीह के जीवन का अनुकरण करें।

मसीह की तरह, परमेश्वर ने हमें क्षमा किया। हमें भी क्षमा करने में सक्षम होना चाहिए। सच कहा जाए तो, बहुत सारा गुस्सा इसलिए पनपता है क्योंकि हम क्षमा करने के लिए तैयार नहीं होते।

बहुत सारी कड़वाहट, नाराज़गी, बदनामी, ईशनिंदा और गपशप इसलिए होती है क्योंकि हम माफ़ करने के लिए तैयार नहीं हैं। मुझे माफ़ करने के लिए ग्रीक शब्द अफ़्रीमी पसंद है क्योंकि उस शब्द का अनुवाद तलाक हो सकता है।

और वास्तव में, मुझे लगता है कि 1 कुरिन्थियों 7 तलाक के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। जाने देना, जाने देना, दर्द के कारण को जाने देना। चाहे वह आपका जीवनसाथी हो, जो गर्दन में दर्द है, या कोई ऐसा व्यक्ति जो आपको नुकसान पहुँचा रहा है।

आइए हम इसका लाभ उठाएं। और यह आगे चलकर उस बात का परिचय देता है जिसे मैं कार्य नैतिकता कहता हूँ। श्लोक 28 में लिखा है, चोर अब चोरी न करे, बल्कि अपने हाथों से ईमानदारी से काम करे ताकि उसके पास ज़रूरतमंदों के साथ बाँटने के लिए कुछ हो।

चोरी करना निषिद्ध है। और मुझे कहना चाहिए कि मैंने प्राचीन दर्शनशास्त्र के बहुत से नैतिकतावादियों को पढ़ा है, जिन्होंने चोरी की निंदा की है। लेकिन चोरी करना बहुत आम बात थी।

दरअसल, क्रेते जैसी जगहों पर तो वे उन समुद्री लुटेरों की भी तारीफ करते थे जो लोगों को लूटने के लिए समुद्र में जाते हैं। वे उनकी तारीफ करते थे। इसके विपरीत, नैतिकतावादी चोरी की निंदा कर रहे हैं।

यहाँ सकारात्मक अंतर यह है कि चोरी करने के बजाय, सदस्यों को अपने हाथों से कड़ी मेहनत करनी चाहिए। और इसका आधार यह है कि वे ज़रूरतमंदों की मदद कर सकें। प्राचीन दुनिया में उदारता एक बड़ी चीज़ थी।

और जो लोग उदार होते हैं और दूसरों की मदद करने के लिए देते हैं, उन्हें समाज में बहुत सम्मान दिया जाता है। और इसलिए एक दार्शनिक, एक रोमन दार्शनिक, सिसरो ने उन लोगों के खिलाफ सवाल लिखे जो केवल सम्मान के लिए उदार होना चाहते हैं, लेकिन अपने दिल से नहीं। लेकिन पॉल कहते हैं कि जो लोग चर्च में हैं उन्हें कड़ी मेहनत करनी चाहिए ताकि वे कई अन्य लोगों के लिए उदार हो सकें।

चोर अब चोरी न करे, बल्कि अपने हाथों से ईमानदारी से काम करे ताकि उसके पास ज़रूरतमंदों को देने के लिए कुछ हो। यह मुझे थिस्सलुनीकियों के दो अध्यायों की याद दिलाता है, जहाँ लिखा है, क्योंकि जब हम तुम्हारे साथ थे, तब भी हम तुम्हें यह आज्ञा देते थे। अगर कोई काम करने को तैयार नहीं है, तो उसे खाने को भी न मिले।

क्योंकि हम सुनते हैं कि तुम्हारे बीच कुछ लोग आलस्य में काम करते हैं, काम में व्यस्त नहीं, बल्कि दूसरों के काम में हाथ बँटाते हैं। अब, हम प्रभु यीशु मसीह में ऐसे लोगों को आज्ञा देते हैं और प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपना काम चुपचाप करें और अपनी जीविका स्वयं कमाएँ। मुझे नीतिवचन अध्याय 10, पद 4 पसंद है। मुझे यह पसंद है, खासकर गुड न्यूज़ अनुवाद से, जो कहता है कि आलसी होना आपको गरीब बना देगा, लेकिन कड़ी मेहनत आपको अमीर बना देगी।

पॉल कहते हैं कि किसी को चोरी नहीं करनी चाहिए। चोरी समाज को नष्ट करती है। चोरी कई तरह की होती है।

कड़ी मेहनत करो, जीविका कमाओ और कुछ कमाओ ताकि तुम उदार बन सको, इसलिए नहीं कि तुम जमाखोरी कर सको, बल्कि इसलिए कि तुम उदार बन सको। और मेरे विरोधाभासों की सूची में अंतिम है अश्लीलता और शिक्षाप्रद भाषण के बीच का अंतर। पॉल यहाँ चार क्षेत्रों को छूता है।

वह सड़े हुए भाषण पर रोक लगाता है, और भाषण के सकारात्मक पहलुओं और नकारात्मक परिणामों को चिह्नित करता है। यह रोक यह है। अपने मुँह से बुरे शब्द न निकलने दें।

यह समुदाय को नष्ट कर देता है। आत्मा को दुखी मत करो। वह सभी को व्यक्तिगत जिम्मेदारी के लिए बुलाता है।

सड़ते हुए शब्दों के लिए शब्द कभी-कभी कुछ ऐसा अस्तित्व में आया है जिस पर विद्वान चर्चा करते हैं, लेकिन आप जानना चाहते हैं कि इस शब्द का प्रयोग यहाँ लाक्षणिक रूप से किया गया है। यह नए नियम में कहीं-कहीं सड़े हुए या सड़े हुए फल के रूप में दिखाई देता है, लेकिन इसका प्रयोग लाक्षणिक रूप से उस चीज़ को संदर्भित करने के लिए किया जाता है जो हानिकारक और अस्वास्थ्यकर है। यहाँ, इसका तात्पर्य अपमानजनक भाषा, अश्लीलता, या तिरस्कारपूर्ण बातचीत या भाषण से है।

पॉल कहते हैं कि विश्वासियों के पास ऐसी भाषा और उच्चारण होना चाहिए जो दूसरों का निर्माण करे, लोगों की ज़रूरतों को पूरा करे और अंततः उन लोगों को लाभ पहुँचाए जो उनकी बात सुनते हैं। अंत में, भाषण के स्पष्ट नकारात्मक प्रभाव थे। यह अन्य लोगों को नष्ट या नुकसान पहुँचाता है या उन्हें ज़हर देता है, और यह पवित्र आत्मा को दुखी करता है।

इफिसियों के बारे में सोचते समय यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि, वास्तव में, हम सभी के पास एक जिम्मेदारी है जिसे निभाना है और एक लक्ष्य है जिसे महिमामंडित करना है। और भाषण के बारे में बात करते हुए और भाषण पर इस सत्र को समाप्त करते हुए, मैं इस विशेष सत्र को यीशु मसीह के शब्दों के साथ समाप्त करना चाहूँगा। हमारे लिए यह याद दिलाना बहुत महत्वपूर्ण है कि हम शब्दों का उपयोग कैसे करते हैं।

और यीशु कहते हैं, इसके लिए हमें खेद है, मत्ती 12, आयत 33 से 37। या तो अच्छे पेड़ और उसके फल को अच्छा कहो, या बुरे पेड़ और उसके फल को बुरा कहो, क्योंकि पेड़ अपने फल से जाना जाता है।

हे साँप के बच्चों, तुम बुरे होकर अच्छी बातें कैसे बोल सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुँह पर आता है। अच्छा मनुष्य अच्छे भण्डार से अच्छी बातें निकालता है। और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।

मत्ती 12 की आयत 36 में लिखा है, "मैं तुमसे कहता हूँ, न्याय के दिन तुम्हें अपने हर एक बेकार शब्द का हिसाब देना होगा। आयत 27, 37, क्योंकि तुम्हारे शब्दों के कारण तुम न्यायोचित ठहरोगे और तुम्हारे शब्दों के कारण तुम दोषी ठहराए जाओगे।"

यह समझना कि एकता ही वह चीज़ है जिसके लिए आस्था के समुदाय को बुलाया जाता है। भगवान अपने समुदाय में काम कर रहे हैं, और फिर भी समुदाय के सदस्यों की जिम्मेदारी है। जिस तरह से हम खुद को संचालित करते हैं, सत्य और असत्य के सापेक्ष, जिस तरह से क्रोध व्यक्त किया जाता है, ईमानदारी, निष्ठा, जिस तरह से हम काम करने के लिए तैयार हैं, आजीविका कमाने के लिए, और दूसरों की मदद करने में सक्षम हैं, जिस तरह से हम शब्दों का उपयोग करते हैं।

शब्दों में शक्ति होती है। उनमें समुदाय बनाने या समुदाय को नष्ट करने की शक्ति होती है। उनमें परिवार बनाने या परिवार को नष्ट करने की शक्ति होती है।

यह एक ऐसी चीज़ है जिसे हम सभी साझा करते हैं। हमें शब्दों का उपहार दिया गया है। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूँ कि आप अपने शब्दों का उपयोग मददगार तरीके से करें, दूसरों को शिक्षित करें और उन लोगों को अनुग्रह प्रदान करें जो आपको सुनते हैं, सभी एक समुदाय बनाने या मसीह के बिना दुनिया में एक आदर्श जीवन जीने की खोज में।

हमारे साथ अध्ययन करने के लिए फिर से धन्यवाद, और मुझे आशा है कि आप इन अध्ययनों को उपयोगी पा रहे हैं। मुझे यह भी उम्मीद है कि आप हमारे साथ बने रहेंगे क्योंकि हमें कैदी पिस्तौल पर अभी तीन और काम करने हैं, और आप इसे मिस नहीं करना चाहेंगे। धन्यवाद, और भगवान आपका भला करे।

यह डॉ. डैन डार्को द्वारा जेल पत्रों पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया व्याख्यान है। यह सत्र 27 है, नई पहचान और नैतिकता, इफिसियों 4:17-32।